❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्यजगत की ओर से समस्त देशवासियों को

नव सस्येष्टी होली

हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 45, अंक 20 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 मार्च, 2022 से रविवार 20 मार्च, 2022
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्त्वावधान में दयानन्द मठ रोहतक में

आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम का 125वां बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

भारतीय संस्कृति और सभ्यता के पुरोधा थे पण्डित लेखराम – बंडारू दत्तात्रेय, महामहिम राज्यपाल

महर्षि दयानंद की विचारधारा को आगे बढ़ाना हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी – *आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात*

पं. लेखराम ने पूरा जीवन आर्य समाज व सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में किया समर्पित – *स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सांसद*

सभा को आर्थिक तौर पर सुदृढ़ बनाकर संगठन को और अधिक मजबूत बनाने के लिए कार्य करेंगे – मा. रामपाल, प्रधान, हरियाणा सभा

6 मार्च रोहतक (हरियाणा): आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा द्वारा रोहतक के दयानंद मठ में पंडित लेखराम के 125 में बलिदान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम सहर्ष सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा के महामहिम राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय जी, गुजरात के राज्यपाल, महामहिम आचार्य देवव्रत जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान एवं समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्य

दिल्ली के आर्यवीरों ने लेखराम जी के जीवन पर किया जीवन्त मंचन : लोगों की आंखों से बही अश्रुधारा

गुरु विरजानन्द दण्डी यज्ञशाला का लोकार्पण करते महामहिम राज्यपाल हरियाणा श्री बंडारू दत्तात्रेय, महामहिम राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत, सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं अन्य।

– *शेष पृष्ठ 7 पर*

इस अवसर पर हरियाणा के महामहिम राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय जी को स्मृति चिह्न भेंट करते आचार्य देवव्रत, स्वामी सुमेधानन्द हरियाणा, सभा के प्रधान मा. रामपाल एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी।

आशा, उत्साह, उमंग, उल्लास की अभिवृद्धि का त्यौहार होली

गत तीन वर्षों में कोरोना की विपरीत परिस्थितियों के कारण नहीं हो सका फूलों की होली का बड़ा आयोजन

भारतीय संस्कृति में पर्व त्यौहारों का विशेष स्थान है। यहां समय समय पर पर्वों को पूरे विधि विधान से मनाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। पर्वों के पीछे अंतर्निहित प्रेरणा से प्रेरित मानव समाज में आशा, उत्साह, उमंग, उल्लास और खुशियों का स्वाभाविक रूप से संचार होता है। पिछले 2 वर्षों से कोरोना महामारी के चलते भारत में पर्व मनाने पर प्रतिबंध होने के कारण हम लोग इस अनुपम आनन्द से वंचित रहे। लेकिन अब ऐसा प्रतीत होता है कि शायद पुन: हम अपने पर्वों को पूरी निष्ठा के साथ मना पाएंगे।

आर्य समाज द्वारा मनाए जाने वाले पर्वों में वासन्ती नव सस्येष्टी होली के पर्व को वैदिक विधि के अनुसार प्रमुखता से मनाया जाता है। दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मनाए जाने वाले होली मंगल मिलन समारोह की तो बात ही निराली होती है। इस दिन पूरी दिल्ली तथा आस पास के आर्य नेता, आर्य विद्वान, आर्य संन्यासीवृन्द, आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य और आर्य परिवारों के स्त्री पुरुष, बच्चे, युवा सभी एकत्रित होते हैं, यज्ञ, भजन, कविता पाठ, हास्य कवि सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम और चंदन तथा फूलों की होली से सबके मन महक उठते हैं। इस पर्व पर सभी आर्यजन जब एक दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं तो ऐसा लगता है जैसे ऋग्वेद के संगठन सूक्त का संदेश साकार हो रहा है। सभी लोग प्रेम पूर्वक मिल-जुलकर अपने पूर्वजों के अनुरूप कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प हो रहे हैं। दिल्ली सभा द्वारा होली पर्व के इस महोत्सव को मनाए दो साल हो गए हैं, ये तीसरी होली है, इस वर्ष भी नव सस्येष्टी पर्व होली का बड़ा आयोजन करना सम्भव नहीं हो पाया, लेकिन ईश्वर की कृपा से सबकुछ यथावत रहा तो हम ऐसी अपेक्षा कर सकते हैं 2023 में होली मंगल मिलन पूर्व वर्षों की तरह ही मनाया जाएगा।

अब हम यहां पर होली पर्व के महत्व और सन्देश पर थोड़ा विचार कर लेते हैं। वस्तुत: बसन्त ऋतु में मनाए जाने

– *शेष पृष्ठ 3 पर*

देववाणी-संस्कृत

द्वेष त्याग

वेद-स्वाध्याय

इदमुच्छ्रेयो अवसानमागां शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्।
असपत्नः प्रदिशो मे भवन्तु न वै त्वा द्विष्मो अभयं नो अस्तु।।-अथर्व. 19/14/1
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता - **द्यावापृथिवी।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - इदं उत् श्रेयः = अब यही कल्याणकर है कि **अवसानं आ अगाम्** = मैं अब समाप्ति पर आ जाऊँ, द्वेष-परम्परा का विराम कर दूँ, अतः हे शत्रो! **त्वाम्** = तेरे साथ न **वै द्विष्मः** = तो द्वेष करना छोड़ ही देता हूँ। **द्यावा-पृथिवी** = द्यौ और पथिवी भी **मे** = मेरे लिए शिवे **अभूताम्** = अब कल्याणकारी हो जाएँ, **प्रदिशः मे असपत्नाः भवन्तु** = सभी दिशाएँ मेरे लिए शत्रुरहित हो जाएँ **नः अभयं अस्तु** = मेरे लिए अब अभय-ही-अभय हो जाए।

विनय - हे मेरे भाई! मैंने अब तक तुमसे बहुत द्वेष किया, खूब शत्रुता की। तुमने मुझे हानि पहुँचायी तो बदले में मैंने तुम्हें पहुँचायी। तुमने फिर उसका बदला लिया तो मैंने उसक प्रत्युत्तर दिया। इस प्रकार हमारी द्वेषाग्नि दिनोंदिन बढ़ती ही गई है, भयंकर रूप धारण करती गई है। इस द्वेष से हम दोनों ही की बहुत हानि हो चुकी है, हम शीर्ण हो चुके हैं। मैं देखता हूँ कि क्रोध में आकर दाँत पीसते हुए प्रत्युत्तर देते जाने का, ईंट का जवाब पत्थर से देते जाने का, कहीं अन्त नहीं है सिवा इसके कि हम दोनों का शीघ्र ही पूरा विनाश हो जाए। कल्याण इसी में है कि अब हम इसे समाप्त करें। हममें से कोई एक अब उत्तर का प्रत्युत्तर न देकर, क्रोध का जवाब क्रोध में न देते हुए शान्ति में देकर, इसमें विराम लगा दे, इसी में कल्याण है, निश्चय से इसी में कल्याण है। इसी प्रकार यह बढ़ती हुई, हमारा नाश करने वाली क्रोधाग्नि शान्त होगी। द्वेष कभी प्रतिद्वेष से शान्त नहीं होता, अतः तुम चाहो तो अब भी मुझसे द्वेष करो, मुझे चाहे कितनी हानि पहुँचाओ, परन्तु मैं अब उसका उत्तर नहीं दूँगा। मैं आज इस द्वेष-परम्परा का अवसान करता हूँ। आज से तुम मेरे शत्रु नहीं हो, तुम तो मेरे भाई हो। मेरे हृदय के किसी कोने में भी अब तुम्हारे प्रति द्वेष का लेश नहीं है। देखें, अब तुम मुझसे कब तक द्वेष करते रहोगे, कर सकोगे। मैं तो अब तुम्हारे क्रोध को, तुम्हारे क्रोध-प्रेरित सब हानि को प्रेमपूर्वक सहता ही जाऊँगा; प्रेम ही करता जाऊँगा; प्रेम ही करता जाऊँगा। मैं आज अपने द्वेष के सब अस्त्र फेंककर, इस दिशा में पूरी हार मानकर निश्चिंत हो गया हूँ। द्वेष समाप्त करते ही मैं तो आज बड़ा विश्राम अनुभव कर रहा हूँ। अब जबकि मैंने इस कल्याण-मार्ग का अवलम्बन किया है तो, हे द्यौ और पृथिवि! अब तुम भी मेरे लिए कल्याणकारी हो जाओ। मेरे अन्तःद्वेष के कारण अबतक यह संसार भी मुझे तपता अनुभव हुआ करता था, पर अब तो यह सब आकाश और भूमि, आसमान और भूमि, यह सब संसार मेरे लिए कल्याणमय हो जाए। हे भाई! केवल तुम्हारे प्रति ही नहीं किन्तु किसी भी व्यक्ति के प्रति आज से मेरा द्वेष नहीं रहा है, अतः ये सब विस्तृत दिशाएँ मेरे लिए आज से बिल्कुल अनुकूल हो गई हैं, शान्त और सुखदायिनी हो गई हैं।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कश्मीर में आतंक की समसामयिक समीक्षा

क्या कश्मीर लौट रहा है शान्ति के मार्ग पर?

जिहाद और तथाकथित आजादी के चलते कश्मीर में पिछले 30 साल का आकंडा अगर उठाकर देखें तो करीब 46 हजार लोग मारे जा चुके हैं। इन 46 हजार लोगों में 24 हजार जिहादी शामिल हैं। यानि मरने वालों में आधे से भी अधिक जिहादी। इसमें दुःख बात ये है कि इसमें हमारे भी सात हजार जवान शहीद हुए हैं। लेकिन अब जाकर जो रिपोर्ट सामने आई है वो सुकून पैदा करने वाली है। रिपोर्ट ये है कि केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में 2016 के बाद पहली बार सक्रिय आतंकियों की संख्या घटने के साथ आतंकी संगठनों में स्थानीय युवाओं की भर्ती में कमी आई है। यानि अब वहां लोग आतंकी बनना नहीं चाहते, वो अपने तिरंगे के साथ खड़े हो गये हैं।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार पिछले कई सालों से आतंकियों का अड्डा माने जाने वाले दक्षिणी कश्मीर में पिछले पांच सालों के दौरान करीब 140-150 आतंकवादी सक्रिय थे लेकिन अब सुरक्षा बलों की सूची में इनकी संख्या 74 ही रह गई है। यही नहीं सुरक्षा बलों के आंकड़े बताते हैं कि इस साल जनवरी से अब तक दक्षिण कश्मीर में सिर्फ चार युवाओं की भर्ती हुई है, जबकि पिछले साल जनवरी-फरवरी में यह संख्या 13-14 थी। यानि इसे ऐसे समझें कि एक आम कश्मीरी ने मन में अपने सुरक्षा बलों पर भरोसे के साथ भारतीयता को भी बखूबी स्वीकार कर लिया है। क्योंकि अब दक्षिण कश्मीर में मुठभेड़ों के बाद शायद ही पथराव की कोई वारदात होती हो। सुरक्षा बलों ने बताया कि अब ऑपरेशन के दौरान फोन और इंटरनेट लाइनें भी नहीं काटी जाती हैं।

इतना ही नहीं आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में स्थानीय लोगों की तरफ से खुफिया सूचनाएं देने में तेजी आई है और सेना आतंकियों के तत्काल सफाये के लिए काइनेटिक ऑपरेशन पर फोकस कर रही है। यानि जब किसी आम कश्मीरी को कोई आतंकी नजर आता है या उसे सूचना मिलती है तो वो फौरन इसकी जानकारी सेना को दे देता है। सेना अपने काम को बखूबी अंजाम दे देती है। इसके अलावा सेना साथ ही नागरिक आबादी, खासकर युवाओं को सकारात्मक तरीके से मुख्यधारा में लाने के लिए नॉन-काइनेटिक ऑपरेशन पर भी ध्यान दे रही है।

यानि जिहाद कश्मीर की तथाकथित आजादी 72 हुर वाले प्रोपगेंडे से युवाओं का ब्रेनवाश नहीं होने देती। उदहारण से समझें तो आधिकारिक, आंकड़ों के अनुसार 2021 में पूरे कश्मीर में 142 युवक आतंकी संगठनों में शामिल हुए थे, जो 2020 में 178 की तुलना में कम रहा। वहीं 2018 में यह आंकड़ा 210 रहा था।

बात जहां तक मार गिराए गए आतंकवादियों की है तो 2021 में 171 आतंकी सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में मारे गए। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक इसमें 149 स्थानीय और 22 पाकिस्तानी आतंकी शामिल हैं। दिलचस्प बात यह है कि 2021 में 84 स्थानीय आतंकवादियों को या तो पकड़ा गया था या उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। यह आंकड़ा पिछले तीन वर्षों की तुलना में अधिक है। 2020 में जहां 81 आतंकियों की गिरफ्तारी आत्मसमर्पण हुआ, वहीं 2019 में यह आंकड़ा 49 और 2018 में 58 रहा था।

इससे आम कश्मीरी को लाभ ये रहा है कि जहाँ साल 2019 में कश्मीर घाटी पहुंचने वाले पर्यटकों की संख्या 5.25 लाख रही थी। वो 2021 में 6 लाख तीस हजार

दक्षिण कश्मीर ही नहीं अगर रिपोर्ट में उत्तरी कश्मीर को भी देखा जाए तो उत्तरी कश्मीर में भी आतंकी संगठनों में युवाओं की भर्ती और आतंकवाद से जुड़ी घटनाओं में कमी दर्ज की गई है। जहाँ 2019 में पथराव की 250 घटनाएं हुई थीं, लेकिन 2021 में ऐसी केवल चार घटनाएं सामने आई हैं। साथ ही आतंकी घटनाएं, पथराव, पोस्टर लगाने और आईएसआईएस के झंडे लहराना, बंद का आह्वान या हड़तालें करना भी घटा है। इसका फायदा ये हो रहा है कि आर्थिक गतिविधियां और पर्यटन बढ़ रहा है और छात्र भी सामान्य रूप से स्कूल जा रहे हैं। साथ ही सेना नॉन-काइनेटिक ऑपरेशन, जिसमें बड़ी आबादी की क्षमताओं के इस्तेमाल पर ध्यान केंद्रित करते हुए आम कश्मीरियों को सकारात्मक तरीके से जोड़ रही हैं। जैसे स्किलिंग, कोचिंग क्लासेस की सुविधाएं मुहैया कराकर विभिन्न तरीके के कार्यों से जुड़ने का मौका दिया जा रहा है।' जिसे लोग पसंद भी कर रहे हैं और पाकिस्तानी जिहाद को बाय-बाय बोल रहे हैं। वर्ष 2020 में आतंकी संगठनों में भर्ती हुए युवाओं की संख्या जहाँ 30 थी, 2021 में सिर्फ 14 युवाओं की भर्ती हुई थी और इस साल अब तक ऐसी किसी भर्ती की कोई सूचना नहीं है।

हो गई। साथ ही जहां तक सुरक्षा बलों के जवानों के शहीद होने की बात है तो 2020 में 31, 2019 में 53 और 2018 में 47 की तुलना में 2021 में 21 जवानों ने शहादत दी। इससे साफ़ जाहिर होता है कि जनता के बीच 'काफी ज्यादा उत्साह, अत्याधिक सकारात्मकता है और वह सामान्य जीवन के लिए व्याकुल हैं।'

परन्तु इसमें अभी एक समस्या है और वो समस्या है पड़ोस की आतंक की फैक्ट्री क्योंकि एक आम कश्मीरी की खुशी उसकी समृद्धि भारतीयता के प्रति बढ़ता उसका समर्पण पड़ोस में रहने वाले देश को यह सब रास नहीं आ रहा है। इस कारण काफी समय से निष्क्रिय पड़े रहे पाकिस्तानी आतंकवादी दक्षिण कश्मीर में फिर सिर उठाने की फ़िराक में हैं।

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य सन्देश

स्वस्थ जीवन – सुखी जीवन

यह सर्वविदित है कि मनुष्य का शरीर पंच तत्वों से निर्मित हुआ है। ये पंचतत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश हैं। इन्हीं से हमारे शरीर का निर्माण संभव हुआ है और प्रकृति अपनी संरचना का उपचार भी स्वयं करती है। इसलिए अनेक चिकित्सा पद्धतियों में प्राकृतिक चिकित्सा एक प्रमुख चिकित्सा पद्धति है। स्वास्थ्य रक्षा के इस स्तंभ में हम प्राकृतिक चिकित्सा से जुड़ी हुई बातें सुझाव के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। जिससे लाभान्वित होकर आप स्वस्थ रहें और सुखी रहें। – सम्पादक

पृथ्वी – स्वस्थ रहने के लिए पृथ्वी के संपर्क में रहना आवश्यक है।

⋆ मिट्टी पर नंगे पैरों से चलकर अथवा ओस से भीगी हुई घास पर टहलकर पृथ्वी से संपर्क का लाभ उठाया जा सकता है।

⋆ यदि संभव हो तो कभी-कभी मिट्टी या घर पर लेटा भी जा सकता है, यह शरीर की थकान को दूर कर स्फूर्तिवान बनाता है।

जल – इसी तरह स्वस्थ रहने के लिए कुछ जल के भी महत्वपूर्ण प्रयोग है।

⋆ प्रात: काल उठ कर कम से कम 3 गिलास पानी पीना चाहिए।

⋆ पूरे दिन में कम से कम 3 लीटर पानी अवश्य पीएं।

⋆ प्रात: काल स्वच्छ जल से स्नान करने से शरीर के समस्त रोम छिद्र खुल जाते हैं, इससे शरीर में हल्का पन और स्फूर्ति आती है तथा सभी मांसपेशियां और संस्थान सक्रिय एवं रक्त संचार उन्नत हो जाता है।

⋆ स्नान करते समय साबुन के स्थान पर स्वच्छ चिकनी मिट्टी या मुल्तानी मिट्टी का भी प्रयोग किया जा सकता है।

⋆गर्मियों में सप्ताह में एक-दो रोज यह प्रयोग अवश्य करें। दूध बेसन का उबटन भी उपयोगी है।

⋆ स्नान करने से पूर्व मोटे खुरदरे तोलिए से शरीर को रगड़ने के बाद स्नान करना अधिक लाभदायक है।

⋆ जब भी प्यास लगे तो प्यास बुझाने के लिए पानी पीना ही सर्वोत्कृष्ट है, पानी को एक साथ न पीकर घूंट घूंट करके पीना चाहिए।

⋆ यदि पानी की स्वच्छता में संदेह हो तो उसे उबालकर एवं छानकर पीएं।

⋆ भोजन के साथ पानी न पीना श्रेयस्कर है। भोजन के आधा घंटे पहले एवं आधा घंटे के बाद पानी पीना चाहिए। बीच में आवश्यकता पड़ने पर एक दो घूंट पानी पी सकते हैं।

अग्नि (धूप) – सूर्य का प्रकाश जीवन में स्वस्थ रहने के लिए अति आवश्यक है।

⋆ हमारा घर ऐसा होना चाहिए जिसमें पर्याप्त सूर्य का प्रकाश आता हो।

⋆ सूर्य की किरणें सात दृश्य तथा अन्य अदृश्य किरणों से बनी है। उनका अपना अपना प्रभाव होता है। ये हमारे शरीर को विटामिन डी प्राप्त कराने में अत्यंत सहायक हैं।

⋆ प्रतिदिन प्रात: काल हल्की धूप में खड़े होकर सूर्य की किरणों का सेवन करना चाहिए। इससे त्वचा जीवन्त एवं मन प्रफुल्लित होता है।

⋆ सूर्य की किरणें शरीर को सक्रिय और संस्थानों को क्रियाशील बनाती हैं।

वायु – अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ वायु अत्यंत आवश्यक है ।

⋆ हमें खुले वातावरण में रहकर शुद्ध वायु का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए

⋆ हमारा घर ऐसा हो जिसमें निर्बाध रूप से वायु का प्रवेश हो, विशेषकर सोने का कमरा पर्याप्त हवादार हो, सोते समय खिड़कियां खुली रहनी चाहिए।

⋆ जब भी संभव हो बाहर खुली हवा में सोने का प्रयास करना चाहिए।

⋆ सूर्योदय के पूर्व उठकर खुली हवा में टहलना और गहरी सांस लेना स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक है।

आकाश – शरीर में आकाश का प्रतिनिधित्व उपवास द्वारा होता है।

⋆ शरीर के संस्थानों का कार्य सुचारु रूप से चले इसके लिए हमें सप्ताह में एक दिन उपवास या रस आहार अथवा फलाहार अवश्य करना चाहिए।

⋆ उपवास, रस आहार, फलाहार में नींबू पानी और शहद या मौसम के ताजे रसदार फल दिन में तीन चार बार लिए जा सकते हैं।

⋆ उपवास से मन को शांति मिलती है तथा शरीर के समस्त स्रोतों की शुद्धि हो जाती है। इससे पाचन संस्थान गतिशील हो जाता है।

प्रथम पृष्ठ का शेष **आशा, उत्साह, उमंग, उल्लास की .....**

वाले इस पर्व पर यज्ञ विशेष के सामूहिक स्तर पर बड़े बड़े आयोजन करने की हमारी वैदिक परंपरा रही है। वैदिक कालीन युग में होली को 'नव सस्येष्टी यज्ञ' ही कहा जाता था, क्योंकि यह वह समय होता है, जब खेतों में पका हुआ अनाज काटकर घरों में लाया जाता है। जलती होली में जौ और गेहूं की बालियां तथा चने के बूटे भूनकर प्रसाद के रूप में बांटे जाते हैं। होली की अग्नि में भी बालियां होम की जाती हैं।

यह लोक-विधान अन्न के परिपक्व और आहार के योग्य हो जाने का प्रमाण है। इसलिए वेदों में इसे 'नव सस्येष्टी यज्ञ' कहा गया है, यानी यह समय अनाज के नए आस्वाद के आगमन का समय है। यह नवोन्मेष खेती और किसानी की संपन्नता का द्योतक है, जो ग्रामीण परिवेश में अभी भी विद्यमान है। इस तरह यह उत्सवधर्मिता आहार और पोषण का भी प्रतीक है, जो धरती और अन्न के सनातन मूल्यों को एकमेव करती है।

होली का सांस्कृतिक महत्व : होली का सांस्कृतिक महत्व 'मधु' अर्थात 'मदन' से भी जुड़ा है। संस्कृत और हिन्दी साहित्य में इस मदनोत्सव को वसंत ऋतु का प्रेम-आख्यान माना गया है। वसंत यानी शीत और ग्रीष्म ऋतु की संधि-वेला अर्थात एक ऋतु का प्रस्थान और दूसरी का आगमन। लेकिन यहां पर हमें यह भी अवश्य सोचना चाहिए कि ऋतुओं के मिलने पर रोग उत्पन्न होते हैं, उनके निवारण के लिए यह यज्ञ किये जाते थे। यह होली हेमन्त और बसन्त ऋतु का योग है। रोग निवारण के लिए यज्ञ ही सर्वोत्तम साधन है।

यह वेला एक ऐसा प्राकृतिक परिवेश रचती है, जो मधुमय होता है, रसमय होता है। मधु का ऋग्वेद में खूब उल्लेख है, क्योंकि इसका अर्थ ही है संचय से जुटाई गई मिठास। मधुमक्खियां अनेक प्रकार के पुष्पों से मधु को जुटाकर एक स्थान पर संग्रह करने का काम करती हैं। जीवन में मधु-संचय के लिए यह संघर्ष जीवन को मधुमय, रसमय बनाने का काम करता है।

आधुनिक परिवेश में होली पर्व के अवसर रंगों का प्रयोग आम बात है। अधिकांशतया लोग एक दूसरे को केमिकल युक्त रंग लगाते हैं, जिससे त्वचा के रोग होने का खतरा बढ़ जाता है। अगर इस पर गहराई से विचार किया जाए तो हम मनुष्य रंग बिरंगे वस्त्र पहनते हैं, रंगों से युक्त दालें, शाक, सब्जियां और अन्य आहार ग्रहण करते हैं। जब हमारे शरीर में कोई बीमारी होती है तो प्राकृतिक चिकित्सक या आयुर्वेदिक चिकित्सक अथवा अन्य चिकित्सा पद्धति का जानकार हमें यही सलाह देता है कि हम हरी सब्जियां घीया, तोरी, लाल, पीली, हरी दालें, फल, सलाद आदि खाएं, और हम खाते भी हैं, जिससे हम स्वस्थ भी होते हैं। इससे पता चलता है कि हमारे तन मन पर रंगों का प्रभाव पड़ता है, लेकिन होली के नाम पर केमिकल युक्त रंगों का प्रयोग कितना हानिकारक है, यह सब जानते हैं। इसलिए इस वार्षिक पर्व नव सस्येष्टी होली का महत्व समझें, इसकी सही प्रेरणा को ग्रहण करें, अगर रंग भी लगाना है तो सही प्रमाणित रंग का प्रयोग करें, वरना चन्दन, फूलों की पत्तियों का प्रयोगकरें और प्रेम प्रसन्नता से होली का पर्व मनाएं, सभी को नव सस्येष्टी होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई।

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/ परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***9650183335***

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj .org

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 198वें जन्मदवस के अवसर दक्षिण दिल्ली के शाहबाद क्षेत्र में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम पर सड़क का नामकरण

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा मानव समाज पर किए गए अनगिनत उपकारों की अगर गिनती की जाए तो हम थक जाएंगे लेकिन उनके उपकारों को पूरी तरह से गिन नहीं पाएंगे। महर्षि के ऋण से उऋण होना बड़ा कठिन कार्य है, ऐसा कहना अतिशोक्ति नहीं होगी। महर्षि दयानंद जी ने संपूर्ण मानव जाति के चहुंमुखी विकास से लेकर देश की आजादी तक अहम भूमिका निभाई। उनके तप, त्याग और साधना पूर्ण सेवा कार्यों को युग-युगान्तरों तक याद किया जाता रहेगा। ऐसे अनोखे, अनूठे महर्षि के 198 जन्मोत्सव पर आर्य समाज शाहाबाद मोहम्मदपुर के तत्वावधान में द्वारिका से समालखा लाल बत्ती तक जाने वाले रोड का 27 मार्च 2022 को महर्षि दयानन्द मार्ग के रूप में नामकरण किया गया। इस अवसर पर श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, सांसद श्रीमती सुषमा रविन्द्र गोदारा, श्री विनय आर्य, श्री सतीश चड्डा, आर्यसमाज शाहाबाद मोहम्मदपुर के अधिकारी, कार्यकर्त्ता और क्षेत्रीय गणमान्य अतिथिगण उपस्थित थे। श्रीमती सुषमा जी यजमान बनी और उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती के क्रान्तिकारी सेवा कार्यों को स्मरण कर उन्हें नमन किया। विनय आर्य जी ने महर्षि द्वारा नारी जाति के उत्थान का जिक्र करते हुए उनके नाम पर मार्ग का नामकरण एक मील का पत्थर बताया और सभी क्षेत्रवासियों को बधाई दी। श्री सतीश चड्डा जी ने भी इस महत्त्वपूर्ण कार्य की सराहना की और सबको बधाई दी।

आर्य समाज की तरफ से समाज व गांव के वरिष्ठ सदस्य श्रीमान श्रीचन्द सोंलकी व वरिष्ठ सदस्या श्रीमती किरण देवी जी सहित गांव के अन्य प्रतिष्ठित महानुभाव ने श्रीफल फोड़कर मार्ग के नामकरण का उद्घाटन किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विनय आर्य जी, श्री सतीश चड्डा, श्री सुखबीर आर्य, श्री रवीन्द्र सुषमा गोदारा व श्रीमान श्रीचन्द व मंत्री डॉ. मुकेश आर्य ने शीलापट का अनावरण किया। कार्यक्रम के संचालक डा. मुकेश आर्य ने इस नामकरण के कार्य को रचनात्मक बताते हुए श्रीमती सुषमा रवीन्द्र गोदारा व चरणसिंह पहलवान का विशेष धन्यवाद किया। श्री चरणसिंह पहलवान ने मार्ग के नामकरण को क्षेत्र के लिए गौरव का कार्य बताया। प्रधान श्रीमान जगबीर सिंह जी ने उपस्थित संस्थाध्यक्ष व ग्रामवासियों का धन्यवाद किया।

श्रीफल फोड़कर उद्घाटन करने वाले के नाम इस प्रकार हैं-

श्रीमती सुषमा रवीन्द्र गोदारा, श्रीमान श्रीचन्द सोलंकी, श्री विनय आर्य, श्री सतीश चड्डा, श्री सुखबीर आर्य, श्री सुरेन्द्र सोंलकी प्रधान 360, प्रधान श्री जगबीर सिंह, मंत्री डा. मुकेश आर्य, श्री ओमप्रकाश सोलंकी, श्री जयनारायण सोलंकी, श्री सुखबीर सोलंकी, श्रीमती किरणदेवी, श्री धर्मपाल शर्मा, श्री भीम सिंह सैनी व पूर्व निगम पार्षद श्री जयप्रकाश व समाज की सक्रिय महिला सदस्य श्रीमती राजवती आर्या, श्रीमती बीरमती, श्रीमती ओमवती, श्रीमती शकुन्तला, श्रीमती रानी, श्रीमती सुनीता व श्री दिनेश सोलंकी कोषाध्यक्ष, श्रीमती संतरा आर्या, श्री लोकेश, श्री विकास पांचा, श्री सुमेर सोलंकी आदि उपस्थित थे।

शाहबाद मुहम्मदपुर क्षेत्र में द्वारिका से समालखा लाल बत्ती तक जाने वाली सड़क का नामकरण के शिलापट्ट का उद्घाटन। मंच संचालन करते आर्यसमाज शाहबाद मुहम्मदपुर के मन्त्री डॉ. मुकेश एवं मंचासीन सर्वश्री सुखबीर सिंह आर्य, श्री सतीश चड्डा, श्री विनय आर्य, श्री रविन्द्र गोदरा, श्रीमती सुषमा रविन्द्र गोदरा एवं अन्य वरिष्ठ सम्मानित जन।

महर्षि दयानंद सरस्वती योग संस्थान आर्य समाज महरौनी के तत्वाधान में

'मोक्ष का स्वरूप एवं उसका उपाय' विषय पर वैबिनार सम्पन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती योग संस्थान आर्य समाज महरौनी (ललितपुर) के तत्वाधान में वैदिक धर्म के सही मर्म को जन जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से 'मोक्ष का स्वरूप एवं उसका उपाय' विषय ऑनलाइन वैबिनार आर्य रत्न शिक्षक लखन लाल आर्य के संयोजन में 11 मार्च, 2021 को में सम्पन्न हुई।

वैदिक विद्वान मुनि सत्यजित ने कहा कि परमात्मा की इस सृष्टि में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अपना भला बुरा सोचने की सामर्थ्य रखता है तथा यह लौकिक व पारलौकिक (सुख) आनंद की प्राप्ति के लिए उपाय करता है लेकिन जब उसे शास्त्रों से पता लगता है कि हमें यह जो सुख समृद्धि प्राप्त हुई है यह सब कुछ छोड़ना पड़ेगा तो वह डर जाता है।

सारस्वत अतिथि विनय आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि युवा पीढ़ी को वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, वेद आदि शास्त्रों के पठन-पाठन के लिए समर्पित होकर कार्य करने की महती आवश्यकता है। हमें अपने परिवार में पंचमहायज्ञ को अपनाते हुए समाज के बीच वैदिक धर्म की चर्चा परिचर्चा के हमेशा अवसर ढूढ़ने की दिशा में कार्य करना होगा।

अध्यक्षता करते हुए वैदिक विद्वान आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने कहा कि वेदोक्त जीवन शैली अपनाकर ही हम मोक्ष को प्राप्त करने के अधिकारी हो सकते हैं।

वैबिनार में इंजी. सन्दीप तिवारी ललितपुर, महिपाल सिंह यादव कचनौदा कला, रामकुमार सेन अजान, रामप्रताप सिंह बैस, अवधेश प्रताप सिंह बैस, शिवकुमार सेन अजान,नीरज सिंह राजस्व विभाग जखौरा, भवानी शंकर लोधी शिक्षक मड़ावरा, अभिलाष चंद्र कटियार बैंक अधिकारी, रामसेवक निरंजन शिक्षक, ध्यान सिंह यादव मिदरवाहा, जयपाल सिंह बुन्देला मिदरवाहा,पारसमणि पुरोहित मिदरवाहा, प्रोफेसर डॉ वेदप्रकाश शर्मा बरेली, प्रोफेसर डॉ. वेद प्रकाश बरेली, विमलेश बंसल दर्शनाचार्य दिल्ली, सहित सम्पूर्ण विश्व से आर्य जन जुड रहे हैं। - **मन्त्री**

श्रुति न्यास आश्रम भुवनेश्वर (उड़ीसा) के निर्माणाधीन भवन का नीरीक्षण

गत दिनों 7 मार्च, 2022 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी आर्यसमाज भुवनेश्वर के वार्षिकोत्सव समारोह में भाग लेने के लिए पहुंचे। इस अवसर वे उड़ीसा के भुवनेश्वर मे श्रुति न्यास आश्रम के निर्माणाधीन भवन के नीरीक्षण के लिए भी पहुंचे। आश्रम में स्वामी सुधानन्द सरस्वती जी से भी विभिन्न विषयों पर उन्होंने चर्चा की।

59वीं अखिल भारतीय शास्त्रशलाका प्रतिस्पर्धा सम्पन्न

कन्या गुरुकुल शिवगंज की ब्रह्मचारिणियों ने जीते प्रथम पुरस्कार

५९ वीं अखिलभारतीयशास्त्रशलाका प्रतिस्पर्धा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जयपुर द्वारा 7 मार्च 2022 को आयोजित शास्त्रस्मरण प्रतियोगिता में आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज की 6 ब्रह्मचारिणियों ने भाग लिया । जिनमें अष्टाध्यायीस्मरण में ब्र. दिव्या आर्या, धातुरूपकंठपाठ में ब्र. शीलवन्ती आर्या, काव्यकण्ठपाठ में ब्र. प्रभा आर्या, न्यायशलाका में ब्र. प्रियंका आदि ने प्रथम स्थान एवं अष्टाध्यायी में ब्र. रीति आर्या, गीतास्मरण में ब्र. सुनीति ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

आर्यसमाज भुवनेश्वर में 45वां त्रिदिवसीय वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य संगठन को मजबूत करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहन देना जरूरी - विनय आर्य

आर्यसमाज भुवनेश्वर में त्रिदिवसीय वार्षिक उत्सव समारोह सहर्ष संपन्न हुआ, इस कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, गुरुकुल महाविद्यालय के उपाचार्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, छतीसगढ़ से पंडित वासुदेव व्रती आमन्त्रित अतिथि थे। इस अवसर पर श्री विनय आर्य को महर्षि दयानन्द पुरस्कार प्रदान किया गया। स्वामी व्रतानन्द को शन्नोदेवी-प्रियव्रत द्वारा राष्ट्रीय वेदवेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में आर्य संगठन को सुदृढ़ करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहन देना चाहिये और युवा पीढ़ी को सामाजिक दायित्व देने चाहिये, इससे सनातन वैदिक धर्म को बचाया जा सकता है।

स्वामी व्रतानन्द ने आयुर्वेद को अपनाने के किसी प्रोत्साहित करने हेतु आहवान दिया, मनुष्य का कर्त्तव्य है कि मानव सेवा में व्रती होना चाहिये। पण्डित वासुदेव व्रती ने वेद, उपनिषद आदि शास्त्रों पर व्याख्यान दिया।

बच्चों को आर्यसमाज में आने के लिए प्रेरित करने के लिए बच्चों को सम्मानित करने की परम्परा आरम्भ कराते दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी।

हरिपुर गुरुकुल के आचार्य सुदर्शन ने प्रतिदिन संध्या-उपासना और यज्ञ का परिचालन किया। आर्य समाज के विरेन्द्र कर ने वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया। आर्यसमाज भुवनेश्वर के प्रधान एवं प्रतिष्ठित वेदविद् डॉ. प्रियव्रत दास एवं माता शन्नोदेवी के तत्त्वावधान में समस्त कार्यक्रम संपन्न हुये। यज्ञप्रकाश दास, प्रोफसर विकाश पण्डा, डॉ गोपाल चन्द्र दास, श्री सुनील दे आदि सदस्यों ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर गुरुकुल हरिपुर और गुरुकुल आमसेना के दो ब्रह्मचारियों को 'सन्तोष वोष पुरस्कार' प्रदान किया गया। समारोह में आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी भी उपस्थित रहे। - ***प्रियव्रत दास, प्रधान***

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

26वां आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

कोविड दिशा-निर्देशों एवं स्वास्थ्य सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए ऑनलाइन आयोजित हुआ सम्मेलन

आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं के अनुसार युवक युवतियों को अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार विचार करके विवाह करने का निर्देश है। क्योंकि राष्ट्र कल्याण के लिए हर तरह की समृद्धि का सशक्त आधार गृहस्थ आश्रम को ही माना गया है। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम में रहकर मानवसेवा, राष्ट्र निर्माण आदि का समस्त कार्य करने वालों के सेवा सम्मान करने की जिम्मेदारी भी गृहस्थियों के ऊपर ही होती है। इसलिए गृहस्थ में पति-पत्नी को मन, वचन और से मिलकर चलने के लिए समान विचार भावना का ध्यान रखकर विवाह करना चाहिए। 13 मार्च, 2022, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 26वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन जूम द्वारा ऑनलाइन आयोजित किया गया, इस अवसर पर राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा जी, मुख्य अतिथि श्री विनय आर्य जी, सह संयोजक आर्य सतीश चड्ढा, सहयोगी व मार्गदर्शक श्रीमती वीना आर्या जी, श्रीमती विभा आर्या जी, श्रीमती रश्मि वर्मा जी, डॉ. प्रतिभा नंद जी इत्यादि महानुभावों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री मंत्र के पाठ से हुआ।

कार्यक्रम की सफलता को बताते हुए राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन अर्जुन देव चड्ढा जी ने सभी अतिथि महानुभावों का धन्यवाद करते हुए, सभी युवक-युवतियों को अपनी शुभकामनाएं दी और कहा कि इस वैश्विक महामारी करोना से उपजी विपरीत परिस्थितियों में भी विभिन्न प्रांतों से लगभग 44 आर्य परिवारों के बच्चों ने भाग लेकर अपने भविष्य को सुखमय बनाने का प्रयास किया है।

वैश्विक महामारी में ऑनलाइन माध्यम बना आर्य परिवारों के युवक युवतियों के रिश्तों का सफल सम्बल

- श्री अर्जुन देव चड्ढा, रा. संयोजक

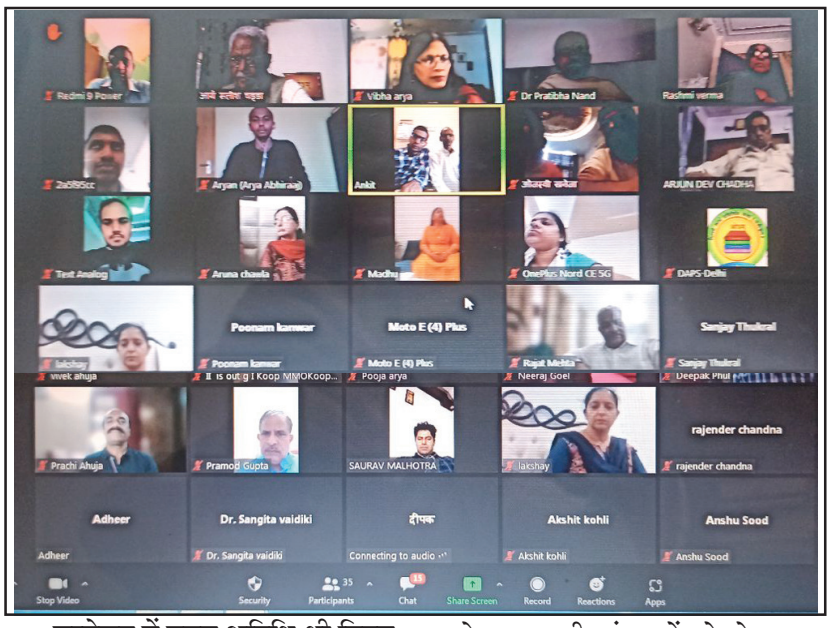

सम्मेलन में मुख्य अतिथि श्री विनय आर्य जी, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, ने वैदिक संस्कारों के प्रचार प्रसार के लिए सभी आयोजकों का धन्यवाद किया तथा सभी भागीदार आर्य परिवारों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आर्य परिवारों के अन्तर्गत समान्य विचारधारा के रिश्ते न मिलने व होने के कारण, होने वाली समस्या के निदान का समाधान केवल युवक युवती परिचय सम्मेलन ही है।

सम्मेलन के सह संयोजक ने बतलाया कि इन सम्मेलनों के बहुत ही सुखद तथा सार्थक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। सम्मेलन में डॉक्टर, एम.बी.ए, बी.टेक आदि उच्च शिक्षा प्राप्त पंजीकृत उम्मीदवारों ने न केवल अपना परिचय देकर, अपने भावी भविष्य को बनाने का प्रयास करने वाले युवक -युवतियों के साहस, भविष्य में कैसा जीवन साथी चाहिए के विचारों का आदान प्रदान करने तथा पुरानी परंपराओं को छोड़, नव जीवन को पुनः वैदिक काल के पथिक बनने की पहल पर हार्दिक शुभकामनाएं।

यह सम्मेलन आने वाले भविष्य में हजारों आर्य परिवारों को सुखी पारिवारिक जीवन प्रदान करेंगे, ऐसा ही सभी आयोजकों और सहयोगियों का प्रयास है। समाज में प्रचलित जाति के बंधन अपने आप विभाजित हो समाप्त हो जाएंगे क्योंकि उनका निवारण केवल और केवल वैदिक परंपराओं में संकल्पित है। महृषि देव दयानंद सरस्वती जी के अनुसार युवक-युवतियों को परस्पर गुण कर्म स्वभाव के अनुसार ही अपना जीवन साथी चुनना चाहिए। उनमें समविचार होने के कारण परिवार का भविष्य उज्जवल होता है। समय-समय पर वैदिक विचारों का आदान प्रदान श्रीमती विभा आर्य जी, श्रीमती रश्मि वर्मा जी तथा डॉ प्रतिभा नंद जी ने सभी भागीदारों के साथ साझा किया।

इस कार्यक्रम को संयोजित करने वाले सभी सहयोगियों के अथक प्रयासों से सम्मेलन संपन्न हुआ, सभी का पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद। इस कार्यक्रम के आयोजन में दिल्ली सभा कार्यालय व मीडिया केन्द्र के सभी सहयोगियों का भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

- आर्य सतीश चड्ढा, सहसंयोजक

Continue From Last issue

God and The Veda

7th Chapter

God: God is supreme. He is the God of gods, who has divine powers associated with HIM. He is the creator of the Universe, and the universe lies within Him. He is Omnipresent and Omniscient. He is divine in qualities, acts and nature. It is He, who should be known by all, not his partial powers or representations. The real 'gods', as they are known, are the 33 divine elements or powers, such as eight Vasus, Heated cosmic bodies, planets, atmosphere, super-terrestial space, suns, rays of eternal spaces, satellities, stars.

Eleven Rudras comprising of ten pranas-Pran, Apan, Vyan, Udan, Saman, Nag, Kurrna Krikal, Devdatte, Dhananjaya, and Jivatma-human Spirit and twelve Adityas, comprising of Chaitra, Vaisakh, etc., Twelve months of the year temporal divisions. These, associated with Yajna and electricity. are known as 'Thirty three Deities'. As God is the source and controller of all of them, He is called 'Mahadeva', i.e. Supreme God. He alone is the creator, sustainer and dissolver of this universe.

Other elements are called 'divine' or 'god' as they derive their divine power from same supreme source, i.e. God, which is ONE. He is always present everywhere, whether we see him or not. As we start any action, good or bad, we feel encouragement or depression and shame, accordingly. It is from the side of God, and not from that of Soul. Soul can see God, only when he engages and devotes himself, after becoming pious, in His consideration. And His realisation is possible, He could still more easily be known through Imagination and Anumana, etc. He is highly judicious and kind. Justice means-to punish the guilty according to the law. Similarly, Kindness means-to award death penalty to a dacoit for his sinful acts, rather than 'pardoning' him away, as it is the real kindness towards the people at large, to save them from such auguries. Hence these attributes of God should never be misunderstood.

God is formless and hence Omnipresent. In the absence of his omnipresence, his other attributes, like that of 'Omnipotent', etc., become meaningless. Though He is formless Himself, He creates this visible universe from the minute causatives. When we say 'Omnipotent', it only means that he creates, sustains or dissolves this creation without the help of anyone else. Because he does dot take birth, so the time-factor does not affect him. And hence he is rightly called 'beginningless'. He alone should be prasied and prayed, and worshipped, but in no way he releases us from the results of our sinful acts. Real 'praise' means to act according to his attributes, Likewise, 'Prayer" makes us selfless, encourages us and gives us confidence of help ; while 'Upasana' enables our soul to come nearer to God.

To be continued.....

With thanks : "Flash of Truth"

by Satyakam Verma :
Abridged form of
'Satyarth Prakash' by
Maharishi Dayanand Saraswati

प्रेरक प्रसंग

सबसे पहले मैं इस परीक्षा में बैठूंगा

शाहपुरा राजस्थान के शासक सर नाहरसिंह ने एक दिन अपने ऋषिभक्त राज्य कर्मचारी महाशय देवकृष्णजी से पूछा कि शाहपुरा में खरे व खोटे आर्यसमाजी का कैसे पता लगे? महाशय जी ने झट से उत्तर दिया कि इसका उपाय तो बड़ा सरल है। महाराज ने कहा, ''बताइए क्या उपाय है?''

महाशय देवकृष्णजी ने कहा, ''आप कुछ दिन के लिए घोर सनातनी बन जाएँ। जितने आर्यसमाजी हैं, उन्हें राज्य के कार्य-व्यवहार से पृथक् कर दीजिए। उनपर रोष भी प्रकट करें। उस अवस्था में खरे, खोटे, असली-नकली आर्य समाजी का पता चला जाएगा।''

महाराज नाहरसिंह बोले, ''तो फिर आपको भी सेवा से पृथक् होना पड़ेगा।''

महाशय देवकृष्ण ने कहा, ''मैं सबसे पहले इस परीक्षा में बैठने को तैयार हूँ।''

इन्हीं महाशय देवकृष्णजी को राज्य की ओर से एक शीशमहल क्रय करने के लिए बम्बई भेजा गया। वहाँ उन्हें दस सहस्त्र रुपया कमीशन (दलाली) के रूप में भेंट किया गया। आपने लौटकर यह राशि महाराज नाहरसिंह के सामने रख दी। उनकी इस ईमानदारी (Honesty) और सत्यनिष्ठा से सबपर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्हें लोग चलता-फिरता आर्यसमाजी समझते थे। उस युग में दस सहस्त्र की राशि कितनी बड़ी होती थी। इसका हमारे पाठक सहज रीति से अनुमान लगा सकते हैं।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

संस्कृत वाक्य प्रबोध

मिश्रितप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
740. येन प्रजा पाल्यते स कथन्न स्वर्गं गच्छेत्?	जिसने प्रजा का पालन किया, वह स्वर्ग को क्यों न जाये?
741. यो राज्यं पीडयेत्स कथन्न नरके पतेत्?	जो राज्य को पीड़ा देवे वह क्यों नरक में न पड़े?
742. येनेश्वर उपास्यते तस्य विज्ञानं कुतो न वर्द्धेत?	जो ईश्वर की उपासना करे, उसका विज्ञान क्यों न बढ़े?
743. यः परोपकारी स सततं कथन्न सुखी भवेत्?	जो परोपकारी है वह सर्वदा सुखी क्यों न होवे?
744. अस्यां मञ्जूषायां किमस्ति?	इस संदूक में क्या है?
745. वस्त्राधने।	कपड़ा और धन।
746. इदानीमपि कुम्भ्यां धन्यं वर्त्तते न वा?	अब कोठी में अन्न है या नहीं?
747. स्वल्पमस्ति।	थोड़ा सा है।
748. त्वमालसी तिष्ठसि कुतो नोद्योगं करोषि?	तू आलसी रहता है, उद्योग क्यों नहीं करता?
749. उभयत्र प्रकाशाय देहल्यां दीपं निधेहि।	दोनों ओर उजियाला होने के लिये दरवाजे पर दिया धर।
750. तेन चर्मासिभ्यां शतेन सह युद्धं कृतम्।	उसने ढाल और तलवार से सौ पुरुषों के साथ युद्ध किया।
751. अतिथीन् सेवसे न वा?	अतिथियों की सेवा करता है या नहीं?
752. प्रेक्षासमाजं मा गच्छ।	कभी मेले तमाशे में मत जा।
753. द्यूतसमाह्वयौ कदापि नैव सेवनीयौ।	जो अप्राणी को दाव पर धर के खेलना वह द्यूत, और प्राणी को दाव पर धर के खेलना वह समाह्वय कहाता है उसको कभी न सेवना चाहिये।
754. यो मद्यपोऽस्ति तस्य बुद्धिः कथं न ह्रसेत्?	जो मद्य पीनेवाला है उसकी बुद्धि क्यों न न्यून होवे?
755. यो व्यभिचरेत्स रुग्णः कथं न जायेत?	जो व्यभिचार करे वह रोगी क्यों न होवे?
756. यो जितेन्द्रियः स सर्वं कर्तुं कुतो न शक्नुयात्?	जो जितेन्द्रिय है वह सब उत्तम काम क्यों न कर सके?
757. योगाभ्यासः कृतो येन ज्ञानदीप्तिर्भवेन्नरः।	जिसने योग का अभ्यास किया है वह ज्ञान प्रकाश से युक्त होवे।
758. वस्त्रपूतं जलं पेयं मनःपूतं समाचरेत्।	वस्त्र से पवित्र किया जल पीना चाहिये और मन से शुद्ध जाना हुआ काम करना चाहिये।
759. स भ्रान्तौ कदापि न पतेत्?	वह भ्रमजाल में कभी नहीं गिरे।
760. अयं वाचालोऽस्त्यतो बरबरायते।	यह बहुत बोलने वाला है इसी कारण बड़बड़ाता है।
761. भूमितले किमस्ति?	भूमि के नीचे क्या है?
762. मनुष्यादयः।	मनुष्य आदि।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम का 125वां बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

उपस्थित थे। हरियाणा के महामहिम राज्यपाल श्री बंडारु दत्तात्रेय जी ने पंडित लेखराम जी को स्मरण करते हुए कहा कि महान विद्वान पंडित लेखराम वे भारतीय संस्कृति और सभ्यता के पुरोधा थे। उन्होंने अपने जीवन में में महर्षि दयानंद के ये वाक्य धर्मो रक्षति रक्षत: और आदर्शों को जीवन में उतारकर पूर्ण समर्पित भाव से आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया। वे आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में इतने लीन हुए कि उस समय उन्हें लोग आर्य मुसाफिर के रूप में जानने लगे। महर्षि दयानंद की शिक्षाओं से ओतप्रोत पंडित लेखराम की भी तर्क-वितर्क और शास्त्रार्थ में गहरी रुचि बन गई। इसी रुचि को उन्होंने हथियार बनाया और धर्मांतरण पाखंडता और जातिगत भेदभाव के खिलाफ लोगों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि देश की न पीढ़ी को वैदिक संस्कृति का ज्ञान देने में आर्य समाज अग्रणी रहा है। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा को 35 लाख रुपए की अनुदान राशि देने की भी घोषणा की।

गुजरात के राज्यपाल, महामहिम आचार्य देवव्रत जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि महर्षि दयानंद की विचारधारा को आगे बढ़ाना हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है। महर्षि दयानंद की विचारधारा आज के परिवेश में भी प्रासंगिक है, क्योंकि समाज में आज भी बहुत सी कुरीतियां है और सामाजिक कुरीतियों का खात्मा करने के लिए ही आर्य समाज की स्थापना हुई थी। आर्य समाज को राष्ट्रवादी आंदोलन बताते हुए आचार्य देवव्रत ने कहा कि आर्य समाज ने हमेशा ही देश की एकता और अखंडता के लिए कार्य किया है।

उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद और आर्य समाज की विचारधारा के चलते ही सरदार भगत सिंह और उनके परिवार की तीन पीढ़ियां देश के काम आ थी। उन्होंने कहा कि उस काल में जात-पात व सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने के लिए महर्षि दयानंद व आर्य समाज ने उल्लेखनीय कार्य किया था। उन्होंने युवा पीढ़ी को आर्य समाज की विचारधारा से जोड़ने का आह्वान भी किया। इसके लिए अधिक से अधिक आर्य वीर दल के शिविर आयोजित करने होंगे।

आचार्य देवव्रत ने कहा कि आर्य समाज की विचारधारा को आगे बढ़ाने और कार्यक्रमों के आयोजन के लिए धन की कमी को आड़े नहीं आने दिया जाएगा। पंडित लेखराम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि उन्होंने ही आर्य समाज में प्रचार की परंपरा को आरंभ किया था। उन्होंने कहा था कि लेखनी और उपदेश का कार्य कभी बंद नहीं होना चाहिए। पंडित लेख राम में हिन्दू समाज के बेटों को विधर्मी होने से बचाने के लिए अपनी जान तक की परवाह भी नहीं की थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मा. रामपाल आर्य ने हुए मेहमानों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार के लिए मौजूदा समय में 11 रथ चलाए जा रहे हैं और 'आओ वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया गया है। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा की खुर्द-बुर्द संपत्तियों की वापसी का ब्यौरा भी इस अवसर पर दिया। उन्होंने कहा कि सभा को आर्थिक तौर पर सुदृढ़ बना दिया गया है। संगठन को और अधिक मजबूत बनाने के कार्य किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सीकर के सांसद स्वामी सुमेधानंद ने भी पंडित लेखराम के जीवन पर प्रकाश डाला और बताया कि उनका पूरा जीवन आर्य समाज व सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में समर्पित था। वे धर्मांतरण के सख्त खिलाफ थे।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर राजबीर सिंह, गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के स्वामी प्रणवानंद आर्य व वीर दल के संचालक स्वामी देवव्रत ने भी अपने विचार रखें। मंच का संचालन सभा मंत्री उमेश शर्मा ने किया। इससे पूर्व कार्यक्रम के मुख्यअतिथि हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय तथा अध्यक्ष गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन भी किया। इस अवसर पर उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार, जिला पुलिस अधीक्षक उदय सिंह मीना, अतिरिक्त उपायुक्त महेंद्रपाल, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विजय सिंह मलिक, डीएसपी कृष्ण कुमार, डीएसपी सज्जन कुमार, ब्रह्माचार्य सोमदेव, श्रीमती अनिल आर्य, श्रीमती राज आर्य, श्रीमती कमलेश आर्य, श्रीमती पूजा आर्य, स्वामी धर्मदेव, स्वामी सुखानंद, वैद्य दयानंद गिरी, डॉक्टर सुकामा आर्य, मुनि जी ऋतमा, आचार्य जयावती, आचार्य हरिदत्त, आचार्य ऋषिपाल, प्रोफेसर रूपकिशोर, श्री प्रकाश आर्य व डॉ. सुरेंद्र कुमार आदि उपस्थित थे।

- उम्मेद शर्मा, महामन्त्री

पृष्ठ 2 का शेष

क्या कश्मीर लौट रहा है शान्ति ....

हालाँकि पिछले साढ़े तीन महीने में नौ पाकिस्तानी आतंकी ढेर किए जा चुके हैं। इसकी एक बड़ी वजह भी है। दरअसल, भर्ती हो नहीं रही है और स्थानीय आतंकी ढेर हो चुके हैं। यानि पाकिस्तानी आतंकवादियों के लिए स्थिति करो या मरो वाली बात हो गई है। हिंसा फैलाने के लिए उन्हें खुलकर सामने आना पड़ रहा है। लेकिन भारतीय सेना का कहना है कि "हर बार जब वे खुलकर सामने आएंगे तो उनका सफाया कर दिया जाएगा।"

इसका सबसे बड़ा उदहारण ये है कि जहाँ पहले जरा जरा सी बात पर पत्थर गैंग सामने आता था, अब वो सब गायब हो चुके हैं। नतीजा पिछले साढ़े तीन महीनों में पथराव की कोई घटना नहीं हुई है। यहाँ तक बड़े-बड़े आतंकी लीडर मारे गये लेकिन एक भी घटना ऐसी नहीं हुई जहां पथराव हुआ हो। यह बहुत बड़ा बदलाव का संकेत है। क्योंकि पिछले दिनों जैसे ही सेना ने जैश-ए-मोहम्मद के एक बड़े आतंकी को मार गिराया था। अमूमन पहले ऐसी घटना पर पथराव हुआ करता था। कई दिन इंटरनेट बंद करना पड़ता था लेकिन जैश के जिहादी के मारे जाने के बाद लोग बाहर निकलकर आए और सेना का धन्यवाद अदा किया और कहा कि उसने उनका जीवन नरक बना रखा था।'

दक्षिण कश्मीर ही नहीं अगर रिपोर्ट में उत्तरी कश्मीर को भी देखा जाए तो उत्तरी कश्मीर में भी आतंकी संगठनों में युवाओं की भर्ती और आतंकवाद से जुड़ी घटनाओं में कमी दर्ज की गई है। जहाँ 2019 में पथराव की 250 घटनाएं हुई थीं, लेकिन 2021 में ऐसी केवल चार घटनाएं सामने आई हैं। साथ ही आतंकी घटनाएं, पथराव, पोस्टर लगाने और आईएसआईएस के झंडे लहराना, बंद का आह्वान या हड़तालें करना भी घटा है।

इसका फायदा ये हो रहा है कि आर्थिक गतिविधियां और पर्यटन बढ़ रहा है और छात्र भी सामान्य रूप से स्कूल जा रहे हैं। साथ ही सेना नॉन-काइनेटिक ऑपरेशन, जिसमें बड़ी आबादी की क्षमताओं के इस्तेमाल पर ध्यान केंद्रित करते हुए आम कश्मीरियों को सकारात्मक तरीके से जोड़ रही हैं। जैसे स्किलिंग, कोचिंग क्लासेस की सुविधाएं मुहैया कराकर विभिन्न तरीके के कार्यों से जुड़ने का मौका दिया जा रहा है।' जिसे लोग पसंद भी कर रहे है और पाकिस्तानी जिहाद को बाय-बाय बोल रहे हैं। वर्ष 2020 में आतंकी संगठनों में भर्ती हुए युवाओं की संख्या जहाँ 30 थी, 2021 में सिर्फ 14 युवाओं की भर्ती हुई थी और इस साल अब तक ऐसी किसी भर्ती की कोई सूचना नहीं है।

हालाँकि सुरक्षा प्रतिष्ठान के सूत्रों ने कहा कि आने वाली गर्मियों में घुसपैठ के प्रयासों में वृद्धि देखी जा सकती है। साथ ही यह आशंका भी जताई कि ये गुट अब दक्षिणी की बजाये उत्तरी कश्मीर को अपना ठिकाना बनाने की कोशिश कर सकते हैं। लेकिन इस सबसे निपटने के लिए सेना का एक तन्त्र पूरी तरह तैयार है। आम कश्मीरी भी अब वो समझ गये कि ये आतंक के ये आका अपने बच्चों को विदेशों में अच्छी शिक्षा दे रहे हैं और गरीब कश्मीरी युवाओं को जिहाद का रसगुल्ला देकर अपनी रोटी सेक रहे हैं।

- सम्पादक

शोक समाचार

श्री कृष्णचन्द्र वर्मा जी का निधन

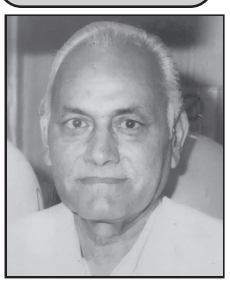

आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली के संस्थापक सदस्य श्री कृष्णचन्द्र वर्मा जी का दिनांक 10 मार्च, 2022 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 11 मार्च को पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभ दिनांक 13 मार्च को आर्यसमाज में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासमुन अर्पित किए।

श्री प्रदीप कुमार आर्य जी का निधन

आर्य समाज वसन्त कुंज, दिल्ली के धर्माचार्य श्री अंकित शास्त्री के 27 वर्षीय चचेरे भाई श्री प्रदीप कुमार जी का दिनांक 11 मार्च 2022 को सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पैतृक गांव अजानपुर, जनपद एटा में किया गया। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ दिनांक 15 मार्च 2022 को पैतृक गांव अजानपुर, जनपद एटा में किया गया।

श्री हरिचन्द बत्रा जी का निधन

आर्य समाज किशनपुरा, गन्नौर मण्डी के पूर्व प्रधान, वयोवृद्ध, अनुभवी, वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार सदैव अग्रणी रहने वाले श्री हरिचन्द बत्रा जी का 12 मार्च, 2022 को 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वर्तमान में वे गुरुग्राम मे निवास करते थे। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 15 मार्च को गुरुग्राम में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 14 मार्च, 2022 से रविवार 20 मार्च, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 16-18/03/2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 मार्च, 2022

गोकुलपुरी स्थित झुग्गी बस्ती मे आग लगने से बेघर हुए लोगों की सहायता के लिए आगे आया आर्यसमाज

'सहयोग' द्वारा अग्निकांड से प्रभावित परिवारों को वस्त्र एवं बर्तनों का वितरण

प्रतिष्ठा में,

गत दिनों गोकुलपुरी स्तिथ मेट्रो पिलर 12 के सामने बनी क्लस्टर कॉलोनी में आग लग गयी थी। आग लगने से 35 झुग्गियां जलकर राख़ हो गयीं, जिनमें लगभग 150 परिवार रहतं थे। लोगों की जरूरत का सारा सामान जलकर राख हो गया। ऐसे में लोगों की सहायतार्थ दिनांक 16 मार्च, 2022 को पिलर नं. 12, राहत शिविर गोकुलपुरी में आर्य समाज की सेवा इकाई "सहयोग" द्वारा लोगों को बर्तन व वस्त्र वितरित किए गये। इस शिविर के अधिकारी का कहना था कि इन लोगों को कपड़ों की अत्याधिक आवश्यकता थी क्योंकि यहाँ सभी लोगों के कपडे जल गये हैं।

दिल्ली सिविल डिफेंस की सहायता से सभी को व्यवस्थित रूप से सामान दिया गया। आवश्यकता होने पर 'सहयोग' की ओर से यहाँ और भी सामान वितरित किया जाएगा। - ***संयोजक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे
प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150
विद्यालयों, गुरुकुलों एवं शिक्षण
संस्थानों के विद्यार्थियों हेतु तैयार
नेम स्लिप

अपने बच्चों की नोटबुक व पुस्तकों पर लगाएँ
महर्षि दयानन्द के चित्र व उपदेश युक्त नेम स्लिप
eshop.thearyasamaj.org

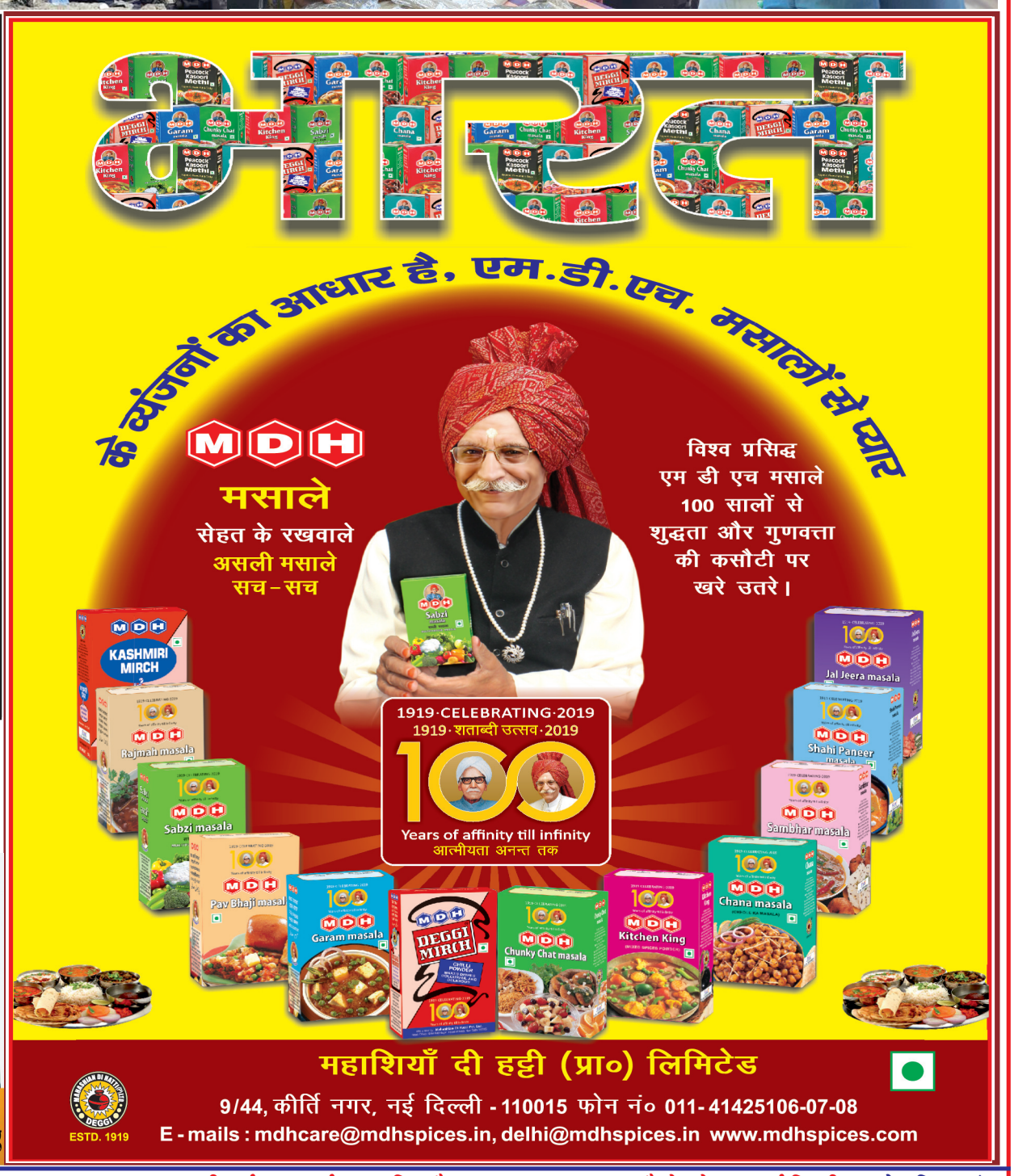

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह